ब्रज में निर्वाहित मल्हार गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा से (संगीत) में पीएच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

मोहिनी राजपूत

शोध निर्देशिका

प्रो० सुधा सहगल

संगीत विभाग

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–282005

2021

भूमिका :–

ब्रज भूमि अपनी अनेक विशेषताओं के लिये विश्व प्रसिद्ध है तथा यह संगीत, संस्कृति, साहित्य तथा आध्यात्मिक चेतना से ओत–प्रोत है जिसमें मथुरा से चारों दिशाओं में चौरासी कोस का क्षेत्र सम्मिलित है। ब्रज भूमि एवं संगीत एक–एक सिक्के के दो पहलू हैं। इस भूमि पर संगीत अपने अनेक रूपों में विद्यमान है, भले ही वह भक्ति सम्प्रदाय हो, शास्त्रीय संगीत हो अथवा लोक संगीत हो।

'मल्हार' यह संज्ञा अत्यन्त प्रसिद्ध है तथा जनसाधारण इस संज्ञा के द्वारा वर्षा ऋतु में गेय गीतों को तुरन्त अपने संज्ञान में ले आता है तथा शास्त्रीय संगीत में तो ''मल्हार'' एक सशक्त, प्रभावी व प्रबल रागांग है जो किसी परिचय पर अवलम्बित नहीं है। ब्रज भूमि में ''मल्हार'' द्वारा निस्संदेह वर्षा–गीतों का सांगीतिक प्रयोग व व्यवहार किया जाता है किन्तु 'मल्हार' (मैल का हरण करने वाला, शुद्ध करने वाला, संस्कारित करने वाला), यह शब्द अपने नाम को ही सुसंगत सिद्ध नहीं करता है अपितु त्रिविध गायन शैली की भांति प्रतिष्ठित भी है।

ब्रज भूमि में विभिन्न गायन शैलियाँ तथा उनके भिन्न–भिन्न स्वरूप भी विद्यमान हैंजो अपनी अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक, सांगीतिक व साहित्यिक विशेषताओं के लिये सुविख्यात है। इन विशेषताओं के पार्श्व में यहाँ प्रवाहित सांगीतिक शैलियों में लोकतत्व, भक्तिभाव एवं आध्यात्मिक चिन्तन से परिपुष्ट हैं जो संगीत को अनेक रूपों में विद्यमान करते हैं। इस भूमि पर जहाँ **प्रथमतः**मन्दिरों में रागाधारित पद गाये जाते हैं वहीं **द्वितीयतः** हवेली संगीत में शास्त्रीय संगीत का निर्वहन होता है तथा **तृतीयतः** जनमानस में लोकसंगीत प्रधान लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथाऐं भी अपनी गहरी जड़ें जमाये हुए हैं।

यह तो सर्वविदित है कि किसी भी कला को जनसाधारण में पहुँचने के लिये कतिपय कारकों की आवश्यकता होती है तथा ये कारक साहित्यिक रचनाओं एवं परम्परागत शैलियों द्वारा व्यक्त होते हैं। ब्रज में अनेक ऐसी शैलियाँ हैं जो भक्ति सम्प्रदायों में व्यवहृत होती हैं तथा जनमानस में व्यक्त होती हैं जैसे– रास, रसिया, लावणी, होरी, मल्हार साथ ही साथ ऐसी भी गायन शैलियाँ हैं जो भक्ति सम्प्रदाय में शास्त्रीय संगीत के साथ व्यवहृत होती है तथा लोकसंगीत के माध्यम से व्यक्त होती हैं, जैसे–पदगायन, होरी, धमार तथा मल्हार। इन प्रचलित गायन शैलियों में से मल्हार गायन शैली जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, अत्यन्त प्रसिद्ध है। इस गायन शैली के तीन प्रकार प्राप्त होते हैं–**प्रथम**, भक्ति सम्प्रदायों में

गायी जाने वाली मल्हार : **दूसरा** रागाधारित शास्त्रीय संगीत प्रधान मल्हार तथा **तीसरा** प्रकार लोकसंगीत प्रधान मल्हार। प्रथम दो प्रकार भक्ति सम्प्रदायों में भी गाये जाते हैं तथा सम्प्रदायों से बाहर भी गाये जाते हैं तथा लोकसंगीत प्रधान मल्हार तो भक्ति सम्प्रदायों के साथ–साथ सम्पूर्ण ब्रज के जनजीवन में व्याप्त है।

मल्हार गायन शैली के तीनों प्रकारों को जब शोधकर्त्री द्वारा सुना गया तो ज्ञात हुआ कि इस गायकी के प्रथम दो प्रकारों में राग प्रयोग, आलाप प्रयोग, बोल बनाव, राग आधारित विभिन्न रचना प्रकार, लोक संगीतात्मक विशिष्टता विद्यमान है, फलस्वरूप इस गायन शैली के विषय में और अधिक जानने और सीखने की जिज्ञासा हुई। इसी जिज्ञासा के कारण ब्रज की मल्हार गायन शैली पर अध्ययन करने की तीव्र इच्छा भी हुयी। विभिन्न कलाकारों, भक्ति सम्प्रदायों के गायकों एवं ब्रज की गायिकाओं से जब सम्पर्क स्थापित किया गया तो और अधिक ज्ञानवर्धन हुआ कि यह एक ऐसी विशिष्ट गायकी है, जिसमें शास्त्रीय संगीत से लेकर लोकसंगीत तक सभी विशिष्ट तत्त्व विद्यमान है।

ब्रज की मल्हार गायन शैली का अध्ययन करने के लिये शोधकर्त्री द्वारा सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण भी किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है–

पुस्तकें :–

1. ब्रज–रास में संगीत : उत्पत्ति, विकास और स्वरूप : आरती श्रीवास्तव, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली 110002
2. ब्रज और पंजाबी ऋतुपर्वोत्सव गीत : डॉ (श्रीमती) अमर दिनेश, के.एल.पचौरी प्रकाशन
3. ब्रज एवं पंजाबी गीतः डॉ. (श्रीमती) अमर दिनेश, के.एल. पचौरी प्रकाशन
4. ब्रज लोकसंगीत : डॉ. निशा रावत, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली
5. ब्रज की संगीत परम्परा : डॉ. वन्दना सिंह, राधा पब्लिकेशन, नई दिलली–110002
6. ब्रज संस्कृति में संगीत : अंजू शर्मा, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. ब्रज भूमि की कलायें : सन्तोष रानी कौल, मयूर पब्लिशर्स, गाजियाबाद
8. ब्रज साहित्य एवं लोकगीत परम्परा : डॉ. सुनीति आचार्य, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर
9. लोकगीत एवं भारतीय संस्कृति की झलक : लीलावती बंसल, डायमण्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

10. पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की संगीत परम्परा (हवेली संगीत) : प्रो. सत्यभान शर्मा, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली

11. ब्रज संस्कृति और लोकसंगीत : डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस

12. मल्हार के प्रकार : जयसुखलाल त्रिभुवनशाह, पब्लिशर्स, संगीत कार्यालय

13. प्रान्तीय संगीत विविध पक्ष : डॉ. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली

शोध प्रबन्ध :–

1. ब्रज प्रदेश के प्रमुख ऋतु पर्वों के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन : कु. अलका वार्ष्णेय, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा।

2. ब्रज मण्डल के लोकोत्सव लोक कल्याण एवं लोक संगीत का अध्ययन, अंजली, वनस्थली विद्यापीठ, 2017

3. उत्तर भारतीय संगीत में ब्रज का योगदान : राकेशबाला सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1993

4. ब्रज के लोककाव्य में वृन्दावन के संगीत साहित्य का योगदान : आर.डी. शर्मा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, 1984

5. ब्रज की गायन शैलियाँ, परम्परायें एवं उनकी उपयोगिता : ममता सिंह, मेरठ विश्वविद्यालय, 1998

6. ब्रज के भक्ति सम्प्रदायों का समाज गायन : अंजू शर्मा, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा, 1993

7. ब्रज में संगीत परम्परा : उद्भव और विकास : ऊषा सक्सेना : वनस्थली विद्यापीठ, 1990

8. भारतीय संगीत में हवेली संगीत का योगदान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : स्मिता पाण्डेय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2014

शोध पत्र :–

1. हवेली अथवा देवालय संगीत : डॉ. अशोक कुमार 'यमन', संगीत कला बिहार, जुलाई 2011

2. पुष्टिमार्गीय वैष्णव देवालय संगीत (हवेली संगीत) : डॉ. सत्यभान शर्मा, संगीत पत्रिका, अप्रैल 1984

3. ब्रज के लोकगीतों में परम्परा एवं रूढ़ियाँ : डॉ. शकुन्तला नागर, उपशास्त्रीय संगीत अंक, फरवरी 2003

4. पुष्टिमार्गीय देवालय संगीत, सत्यभान शर्मा, सुलभ संगीत, जून 1971

5. जीवन का अमृत ''लोकसंगीत'', डॉ. अनसूया पाठक, संगीत : सितार : गत–तोड़ा अंक, अक्टूबर 2005

6. ब्रज के लोकगीतों में भाषा–सौष्ठव तथा शब्द–मैत्री : डॉ. शकुन्तला नागर, संगीत : सितार : गत–तोड़ा अंक, जून 2005

7. ब्रज भाषा काव्य और संगीत : डॉ. मुकेश गर्ग, संगीत : सितार : गत–तोड़ा अंक, अक्टूबर–2005

8. ब्रज भाषा की शब्द रचना और संगीत : डॉ. (कु.) राकेशबाला सक्सेना, संगीत पत्रिका, मार्च 1984

9. हवेली संगीत की परम्परा : डॉ. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या' सहस्राब्दी संगीत अंक, मार्च 2001

10. लोकसंगीत और उनकी विशेषता : डॉ. जितेन्द्र शुक्ला, संगीत पत्रिका, मार्च 2015

उपर्युक्त साहित्य के सर्वेक्षण के पश्चात् ज्ञात होता है कि मल्हार गायन शैली पर साहित्य नगण्य ही है। कतिपय शोध प्रबन्धों जैसे :– ब्रज प्रदेश के प्रमुख ऋतु पर्वों के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन : कु. अलका वार्ष्णेय, दयालबाग़ ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा। 2.उत्तर भारतीय संगीत में ब्रज का योगदान : राकेशबाला सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1993। 3.ब्रज की गायन शैलियाँ, परम्परायें एवं उनकी उपयोगिता : ममता सिंह, मेरठ विश्वविद्यालय, 1998 में मल्हार गायन शैली का यत्र तत्र ही उल्लेख हुआ है जो प्रस्तावित शोध हेतु अपर्याप्त है। कतिपय पुस्तकों जैसे 1. ब्रज एवं पंजाबी गीतः डॉ. (श्रीमती) अमर दिनेश, के.एल. पचौरी प्रकाशन। 2. ब्रज लोकसंगीत : डॉ. निशा रावत, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली। 3. ब्रज की संगीत परम्परा : डॉ. वन्दना सिंह, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली–110002 में तो मल्हार गायन शैली को वर्षा गीतों से जोड़ा गया है किन्तु इस गायन शैली के साहित्यिक, सांगीतिक व स्वरलिपिबद्ध उदाहरण कहीं भी दृष्टव्य नहीं होते।लोकसंगीत, लोकगीत, ब्रज मण्डल के लोकोत्सवों पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की संगीत परम्परा, लोकगीत, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर तो साहित्य प्रचुर

मात्रा में उपलब्ध है किन्तु लोकगीतों के अन्तर्गत भी मल्हार गायन शैली प्रधान सांगीतिक सामग्री कहीं उपलब्ध नहीं होती है।

आश्चर्य है कि इतनी समृद्ध गायन शैली जिसमें उच्च कोटि का साहित्य, रागाधारित रचनायें, भक्ति सम्प्रदायों के पद, ब्रज भूमि की महिलाओं द्वारा गायी जाने वाली लोकगीत प्रधान मल्हार गायन शैली को किसी भी साहित्य द्वारा प्रकाश में नहीं लाया गया। इस गायन शैली में शास्त्रीय संगीत, भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति, लोकसंगीत के इतने विशिष्ट तत्व छिपे हुए हैं कि यदि इस गायन शैली को उजागर किया जाये तो न केवल विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिये लाभप्रद होगी अपितु संगीत गायन में रूचि रखने वाले संगीत के विद्यार्थियों के लिये रोजगार प्रधान भी सिद्ध हो सकती है तथा शोध द्वारा इस गायन शैली का संरक्षण व संवर्धन भी हो सकेगा।

शोधकर्त्री संगीत की छात्रा है तद्नुसार किसी गायन शैली अथवा विशेषकर मल्हार गायन शैली पर शोधकार्य करने के अन्तर्गत उसका गहन सांगीतिक अध्ययन करना, गायन शैली के साहित्य को जानना, गायन शैली की तकनीक समझना, सीखना व गाना तथा उसमें छिपे सांगीतिक तत्वों को उजागर करके जहाँ एक ओर इस अप्रकाशित गायन शैली को प्रकाश में लाना होगा वहीं दूसरी ओर यह गायन शैली शोधकर्त्री को भविष्य में क्रियात्मक संगीत प्रधान नवीन दिशा की ओर उन्मुख करेगी। अतःमल्हार गायन शैली को गहनता से समझने, सीखने एवं गायन हेतु निम्नलिखित विषय का चयन किया गया है–

विषय कथन –

''ब्रज में निर्वाहित मल्हार गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

अध्ययन की आवश्यकता –

ब्रज की मल्हार गायकी वृहदतः एक लोक–संगीतात्मक शैली है किन्तु इसके भक्ति सम्प्रदायों एवं शास्त्रीय संगीत प्रधान संगीतात्मक अर्थों में गहन अध्ययन नहीं हुआ है। जैसा कि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि मल्हार गायकी पर विशेष रूप से कोई साहित्य, पुस्तके, शोध ग्रन्थ अप्राप्य ही हैं। अतः विषय सामग्री का अल्प होना प्रस्तावित शोध को आवश्यक सिद्ध करता है।

ऐसी विशिष्ट संगीतात्मक शैली को खोजने, समझने तथा उसका गहन अध्ययन कर उसमें निहित संगीतात्मक तत्वों को प्रकाश में लाने की अत्यन्त आवश्यकता है। शोध द्वारा इसके संरक्षण व संवर्धन की भी आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व –

प्रस्तावित शोध का महत्त्व मल्हार गायन शैली को प्रकाश में लाने से होगा तथा साहित्यिक एवं सांगीतिक तत्वों के द्वारा संयुक्त यह गायन शैली प्रस्तावित शोध को महत्वपूर्ण सिद्ध करेगी।

उद्देश्य :–

1. ब्रज भूमि की मल्हार गायन शैली का इतिहास, सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पक्षों का अध्ययन
2. मल्हार गायनशैली के स्रोतों एवं सांगीतिक पक्षों को खोजना तथा सांगीतिक अन्वेषण करना
3. मल्हार गायन शैली के सभी स्वरूपों पर दृष्टिपात करना
4. मल्हार गायन शैली के कलाकारों द्वारा सूचनाऐं व जानकारी एकत्रित कर गायन शैली को सीखना व स्वरलिपियाँ निर्मित करना
5. मल्हार गायन शैली के विभिन्न रचनाओं का संकलन करना
6. मल्हार गायन शैली के विभिन्न कलाकारों द्वारा मल्हार गायन शैली के विषय में साक्षात्कार करना।

परिसीमांकन –

कार्य व समय की सीमा को देखते हुये अध्ययन को मथुरा, वृन्दावन तक ही सीमित किया जायेगा।

कार्यविधि एवं उपकरण :–

प्रस्तावित शोध को व्याख्यात्मक विधि द्वारा संचालित किया जायेगा तथा शोध उपकरणों जैसे– प्रश्नावली, अनुसूची का निर्माण कर शोध को पूर्ण किया जायेगा। सांगीतिक उपकरणों में स्वरलिपि निर्माण हेतु हारमोनियम, तानपुरा, ढोलक, तबला इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा। अन्य उपकरणों में कम्प्यूटर, वी.डी.यू कैमरा, लैपटॉप का भी प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोत :–

शोध हेतु ग्रन्थ, पुस्तके, पत्र–पत्रिकाओं से सूचनाऐं एवं जानकारी एकत्रित करने हेतु दयालबाग शिक्षण संस्थान के केन्द्रिय पुस्तकालय, संगीतविभागीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय, ब्रजमण्डल पुस्तकालय मथुरा, हरिदासी सम्प्रदाय पुस्तकालय मथुरा से शोध सामग्री एकत्रित की जायेगी।

अध्यायों का विभाजन –

प्रस्तावित शोध को निम्न सम्भावित अध्यायों में विभाजित किया जाएगा–

प्रथम अध्याय :–ब्रज भूमि के धार्मिक, सांस्कृतिक व सांगीतिक पक्ष

द्वितीय अध्याय :–मल्हार गायन शैली का ऐतिहासिक परिचय

तृतीय अध्याय :–मल्हार गायन शैली के विभिन्न साहित्यिक स्वरूपों का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय :–मल्हार गायन शैली के विभिन्न सांगीतिक स्वरूपों का अध्ययन

पंचम अध्याय :–मल्हार गायन शैली के सांगीतिक स्वरूपों का विश्लेषण

षष्ठम् अध्याय :–मल्हार गायन शैली के विभिन्न स्वरूपों का स्वरलिपिबद्ध संकलन

निष्कर्ष

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

प्रश्नावली :–

प्रस्तावित शोध की रूपरेखा का निर्माण करने से पूर्व मल्हार गायन शैली से सम्बन्धित कलाकारों, गायकों एवं विद्वानों से पूछे गए प्रश्न –

1. मल्हार गायन शैली क्या है ?
2. मल्हार गायन शैली को कौन–कौन से सम्प्रदायों में गाया जाता है ?
3. कौन–कौन से संगीत ग्रन्थों में संगीत सामग्री उपलब्ध होती है ?
4. शास्त्रीय संगीत प्रधान मल्हार गायकी का कौन सा स्वरूप मथुरा, वृन्दावन में प्रचलित है ?
5. मल्हार गायन शैली में कौन–कौन से सांगीतिक तत्व प्राप्त होते हैं ?
6. मल्हार गायन शैली का नाम मल्हार नाम से ही क्यों पड़ा? सावन या वर्षा गीतों से भी हो सकता था।

7. लगभग कितने रागों व तालों का प्रयोग रचनाओं में प्राप्त होता है ?

8. मल्हार गायन शैली की पारम्परिक धुनें किस प्रकार गाई जाती है ?

9. मल्हार गायन शैली के क्या कुछ विशिष्ट राग है? यदि हाँ तो रागों के नाम बताइऐ?

10. यदि नहीं तो कौन से रागों में मल्हार गायन शैली गाई जाती है ?

11. मल्हार अथवा वर्षा गीतों का सम्बन्ध साहित्य से ही है या मल्हार अथवा उसके प्रकारों से भी है?

12. क्या मल्हार गायन शैली केवल वर्षा ऋतु से सम्बन्धित है ?

13. मल्हार गायन शैली के साहित्य में कौन सी भाषा का प्रयोग होता है ?

14. मल्हार गायन शैली का उल्लेख क्या संगीत ग्रन्थों में प्राप्त होता है ?

15. क्या शास्त्रीय संगीत में निर्वाहित गायन शैलियाँ भक्ति सम्प्रदायों में गाई जाती हैं ?

16. लोकगीत प्रधान मल्हार गायन शैली का प्रयोग कौन सा वर्गसमूह करता हैं ?

17. क्या शास्त्रीय संगीत में मल्हार गायन शैलियाँ भक्ति सम्प्रदायों से भिन्न हैं ?

18. क्या मल्हार गायन शैली के ऐतिहासिक उल्लेख संगीत ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं ?

19. क्या मल्हार गायन शैली प्रधान पदों को किसी पर्व अथवा त्यौहार पर गाया जाता है ?

20. मल्हार गायन शैली का क्रियात्मक स्वरूप क्या हैं ?

21. मल्हार गायन शैली के साथ प्रयुक्त होने वाले वाद्य कौन–कौन से हैं ?